Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की पहली बैठक की संस्तुतियॉ

दिनॉक : 8 अप्रैल, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की पहली बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 8 अप्रैल, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, मौसम विज्ञान विभाग, अमौसी, लखनऊय च.शे.आ. कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुरय न.दे. कृषि, प्रौ. विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद एवं स.ब. भाई पटेल कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम व फसल वैज्ञानिकय उद्यान विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, वन विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 08 अप्रैल से 14 अप्रैल, 2015 तक) प्रदेश में इस सप्ताह 9 एवं 10 अप्रैल को छोड़कर शेष दिनों में हल्के से मध्यम बादल छाये रहने के साथ–साथ दिनांक 11, 12 एवं 13 अप्रैल को छुटपुट बूंदाबादी के साथ कहीं–कहीं स्थानीय स्तर पर हल्की वर्षा की संभावना है। दिनांक 11 अप्रैल को पश्चिमी एवं मध्य उत्तर प्रदेश के कुछ जनपदों में हल्की वर्षा, दिनांक 12 अप्रैल को पश्चिमी, पूर्वी एवं दक्षिण–पूर्वी क्षेत्रों में तथा 13 अप्रैल को पूर्वी उत्तर प्रदेश में हल्की वर्षा होने के आसार है। इस सप्ताह प्रदेश में मुख्यतया उत्तर पूर्वी एवं दक्षिण पश्चिमी हवाएँ औसतन 4–10 कि.मी./घण्टा की गति से चलने की सम्भावना है। अधिकतम तापमान औसत रूप से 34–36 डिग्री सेल्सियस के मध्य बने रहने के आसार है जो सामान्य के पास है। बदलो की मौजूदगी के कारण न्यूनतम तापमान सभी अंचलों में 18–20 डिग्री सेल्सियस के मध्य रहने के आसार है जो औसत रूप से सामान्य से 2–3 डिग्री सेल्सियस अधिक हैं। सापेक्षित आर्द्रता सप्ताह के अधिकतम अन्तिम दिनों में 80–90 तथा न्यूनतम आर्द्रता प्रथम तीन दिनों तक 35–50 एवं शेष दिनों में 60–70 प्रतिशत रहने के आसार हैं। कुल मिलाकर इस सप्ताह प्रदेश में मौसम अर्ध–आर्द्र रहेगा।

कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश से प्राप्त माह मार्च से 07 अप्रैल तक सामान्य वर्षा 11.9 मिमी. के सापेक्ष 63.0 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो इस अवधि की वर्षा से 51.1 मिमी. अधिक है। प्रदेश के 75 जनपदों में से 71 जनपदों में अत्यधिक वर्षा (120 प्रतिशत से अधिक) प्राप्त हुई है, तीन जनपदों में (सामान्य का 80–120 प्रतिशत) वर्षा सामान्य प्राप्त हुई है। जनपद श्रावस्ती की वर्षा का रिकार्ड उपलब्ध नहीं है। गत वर्ष 2014 में इस अवधि में प्रदेश को 21.1 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई थी। प्रदेश में इस अवधि में सबसे अधिक वर्षा कानपुर नगर में रिकार्ड की गयी है जो इस अवधि की सामान्य वर्षा 9.2 मिमी. के सापेक्ष 121.9 मिमी. अधिक है।

कृषि विभाग से प्राप्त जायद फसलों के आच्छादन आंकडों के अनुसार दिनांक 7 अप्रैल, 2015 (अनंतिम) तक कुल लक्ष्य 18.46 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 11.19 लाख हेक्टेयर की बुआई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 60.59 प्रतिशत है। मक्का की बुआई लक्ष्य 0.9 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.82 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है जो लक्ष्य का 91.22 प्रतिशत है। बाजरे की प्रतिपूर्ति 0.5 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.19 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 39.5 है, मूंग की बुआई का लक्ष्य 1.21 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.85 लाख हेक्टेयर हुई जो लक्ष्य का 70.2 प्रतिशत है। उडद की बुआई 0.68 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.44 लाख हेक्टेयर हो चुकी है जो लक्ष्य का 65.71 प्रतिशत है। इसी प्रकार अन्य फसलों में सूरजमुखी लक्ष्य के सापेक्ष 14.03 प्रतिशत, कपास लक्ष्य के सापेक्ष 19.78 प्रतिशत, जायद धान की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 70.18 प्रतिशत तथा चेना की बुआई लक्ष्य के सापेक्ष 32.5 प्रतिशत की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- वर्षा के दृष्टिगत गेहूँ की फसल की कटाई कर सुरक्षित स्थान पर रखें तथा कटी हुई फसल की मड़ाई का कार्य 11 अप्रैल के पूर्व ही करना सुनिश्चित करें।
- इस सप्ताह वर्षा के दृष्टिगत कीट व रोग दिखाई देने पर ही कीटनाशी अथवा रोगनाशी का प्रयोग दिनांक 13 अप्रैल के बाद ही आसमान साफ होने पर करें।
- रबी में वर्षा से हुए नुकसान की भरपाई के लिये जायद फसलों में मूंग की बुआई प्राथमिकता पर शीघ्र करें।
- जिन कृषकों ने के.सी.सी. के द्वारा अपनी फसलों का पोषण किया है और बीमा का प्रीमियम अदा किया है, ऐसे बीमित किसानों को दैवीय आपदा से फसल के नुकसान की क्षतिपूर्ति नियमानुसार प्रदान की जायेगी।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की कटाई/मड़ाई का कार्य शीघ्र सुनिश्चित करें। मड़ाई के उपरान्त गेहूँ को धूप में सूखाकर ही भण्डारण करें जिससे भण्डारण में होने वाली हानि से बचा जा सकें।
- अनाज को धातु की बनी बखारियों अथवा कोठिलों, बोरियों या कमरें में जैसी सुविधा हो भण्डारण करें। भण्डारण के लिए धातु की बनी बखारी बहुत ही उपयुक्त है। भण्डारण के पूर्व कोठिलों तथा कमरे को साफ कर लें और दीवालों तथा फर्श पर मैलाथियान 50 प्रतिशत के घोल (1:100) को 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव के बाद सूखने के उपरान्त भण्ड़ारण करें। बखारी के ढक्कन पर पालीथीन लगाकर मिट्टी का लेप कर दें जिससे वायुरोधी हो जायें।

जायद फसलों की खेती

- मूंग की प्रजातियों सम्राट, मूंग जनप्रिया, मेहा, एच.यू.एम 16, टी.एम.वी. 37, मालवीय जनचेतना की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड दें) कर दें। विषाणुवाहक 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- मूँग/उर्द में पहली सिंचाई बुआई के 30–35 दिन के बाद करें इससे पूर्व सिंचाई करने पर जड़ों में नत्रजन स्थिरीकरण ग्रन्थियों का विकास ठीक से नहीं होता है।
- सूरजमुखी में शेष नत्रजन की मात्रा बुआई के 25–30 दिन बाद सिंचाई के उपरान्त उपयुक्त नमी पर करने के बाद हल्की मिट्टी (10–15 सेमी.) पौधों के पास चढ़ायें।

गन्ना की खेती

- गर्मी के मौसम में समय से पानी लगाएं तथा ओट आने पर गुड़ाई करें।
- बुआई के 45 दिनों के पश्चात यूरिया (नाइट्रोजन) की 1/3 मात्रा की टाप ड्रेसिंग करें।
- कंडुआ ग्रसित पौधों में बन रहे चाबुक दिखते ही उन्हे पॉलीइथिलीन के लिफाफे से ढककर कोटें व बोरों में भर दें और खेत में दूर ले जाकर जला दें या गड्ढे में दबा दें। रोग का फैलाव कम करने के लिए ग्रसित तनों को निकालकर नष्ट कर दें। जिस खेत में पेड़ी रखनी हो उसमें कंडुआ प्रभावित थान को जड़ से उखाड़कर नष्ट कर दें।
- सूख रहे पौधों को जड़ से उखाड कर जला दें। घासी प्ररोह ग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- ऊनी माहू (वूली एफिड) के प्रबंधन के लिए तालाब या नमी वाले स्थान जैसे वृक्षों के नीचे या इसके आस–पास वूली एफिड के प्रकोप को अच्छी तरह ढूंढे। जहाँ भी वूली एफिड दिखाई दें, मेटासिस्टॉक्स (0.05) का छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर 2–3 बार करें। क्लोरपारीफॉस/क्वीनालफॉस (0.2 किग्रा. मूल तत्व प्रति हेक्टेयर) का छिड़काव करें।
- पाइरिला दिखने पर परजीवी इपीरिकेनिया के कोकून समूहों का (पत्ती के साथ) इनके बाहुल्य वाले खेतों से निकालकर इनकी कमी वाले खेतों में पत्तियों में स्टेपल करें।
- गेहूँ के बाद ग्रीष्म गन्ना बोने हेतु तैयारी करें तथा क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों का चुनाव करें।

बागवानी

- आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए नैथलीन एसिटिक एसिड (एन0ए0ए0) 20 पी0पी0एम0 (90 मिली/200 लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- आम के भुनगा/फुदका/मधुआ कीट के प्रकोप होने पर कार्बरिल 0.2 प्रतिशत (4 ग्राम/ली0 पानी) या क्वीनालफास 0.05 प्रतिशत (2.0 मि0 ली0/ली0 पानी) या मोनोक्रोटोफॉस 0.054 प्रतिशत (1.25 मि0 ली0/ली0 पानी) या डाइमेथोएट 0.06 प्रतिशत (2 मि0ली0/ली0 पानी) या 0.04 प्रतिशत क्लोरपाइरीफॉस (2 मि0 ली0/ली0 पानी) का दूसरा छिड़काव जब फल मटर के दाने के बराबर हो तो छिड़काव करें।
- आम में फल की आंतरिक ऊतक क्षय (फ्रूट निक्रोसिस) की रोकथाम हेतु बोरेक्स 1 प्रतिशत (10 ग्राम/लीटर पानी) घोल का छिड़काव करें।
- आम के भुनगा कीट के साथ–साथ सूटी मोल्ड का प्रकोप होता है अतः उपचार हेतु बेटासूल + मेटासिड + गोद (0.2, 0.1 एवं 0.

3 प्रतिशत का 10 से 15 दिनों के अन्तर 3 छिड़काव करें।

- आम के यदि पॉलीफेगस कीट का प्रकोप दिखाई दे रहा हो तो डेमेक्रॉन 1.5 मि0 ली0 प्रति ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- केले में प्रति पेड़ 50–60 ग्राम यूरिया तथा 200–250 ग्राम म्यूटेट आफ पोटाश को गुड़ाई के बाद मिट्टी में मिलायें। इसके बाद 10–12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा पुत्तियों की कटाई करें।
- नीबू वर्गीय फलों में नीबू की तितली के गिडार की रोकथाम हेतु 5 प्रतिशत एलसान धूल अथवा 50 प्रतिशत कार्बरिल का भुरकाव करें।
- पपीते के बीज की बुआई कर लें।

सब्जियों की खेती

- भिण्डी में पीतशिरा मोजेक रोग के प्रसारण को रोकने हेतु डाइमिथोएट 30 ई0सी0, 1.6 मि0ली0 प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करें।
- लहसुन यदि पकने की अवस्था में हो तो सिंचाई बंद कर दें।

पशुपालन

- अगर अभी तक पशुओं में मुँहपका–खुरपका रोग की रोकथाम हेतु टीकाकरण नहीं कराया है तो तुरंत करायें।

रेशम पालन

- सिल्क लारवी के अच्छी सेहत के लिये पत्ती का रख–रखाव नमीयुक्त गनीक्लाथ से ढ़ककर करें जिससे पत्ती की गुणवत्ता बराबर रहें व अच्छे परिणाम प्राप्त हो सके।
- ग्रीष्म फसल के कीटपालन में तापक्रम, आर्द्रता को नियंत्रण में रखने का प्रयास किया जाय। यदि आर्द्रता कम हो तो कीट पालन कक्ष की फर्थ में बालू आदि डालकर पानी से तर करते रहे एवं कीट पालन कक्ष में टाट भिगोकर परदे की तरह लटकायें।
- ग्रीष्म फसल कीटपालक/कोया उत्पादक उन्हीं कीड़ों को माउन्टेज में डाले जो पूर्णतया परिपक्व हो गये हो। एक वर्ग फुट में 50 से अधिक कीट माउटिंग हेतु न डाले जाये।
- शहतूत एवं अर्जुन नर्सरी उत्पादक, कृषक अपने नर्सरी क्षेत्र की सिंचाई आवश्यकतानुसार पाक्षिक रूप से अवश्य करते रहे।
- कृषक अपने–अपने शहतूती वृक्षारोपण आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहे जिससे पौध जीवितता अधिकाकधिक बनी रहे।

मत्स्य पालन

- विक्रय योग्य मछलियों का समय–समय पर विक्रय करें।
- मछलियों को शरीर भार का 2 प्रतिशत पूरक आहार प्रत्येक दिन प्रातः काल दें।
- तालाब में प्लेंकटान की मात्रा चेक कर लें। प्लेक्टान कम पाये जाने पर प्लेक्टान कल्चर हेतु तालाब में ताजा गोबर 30 कि0 ग्रा0 प्रति दिन प्रति हे0 की दर से, यूरिया 10 कि0 ग्रा0, डी0 ए0 पी0 20 कि0 ग्रा0, पोटाश 1 कि0 ग्रा0 की दर से घोल बनाकर तालाब में छिड़काव करें तथा तालाब के जल–स्तर को 05–06 फीट बनाये रखें।
- रोग की संभावना होने पर मछलियों वाले तालाब के उपचार के लिए 1 हेक्टेयर प्रति मीटर पानी में 1 किलो पौटेशियम परमैगनेट का घोल बनाकर मिलायें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।
- जिन तालाबों में मत्स्य पालन हो रहा है वहॉ कामन कार्प मत्स्य बीज का संचयन करें। कामन कार्प का बीज सभी निगम व निजी क्षेत्र की हैचरियों पर उपलब्ध है।
- तालाब का चुनाव करने का उचित समय है अतः जिन तालाबों में गर्मी में 1 से 2 फीट पानी बना रहे उन्ही तालाबों का चुनाव करें। मत्स्य पालन हेतु 0.2 हे0 से 5 हे0 तक के तालाबों का चयन किया जाय। तालाबों के लिए जल की आपूर्ति का साधन होना चाहिए जिससे तालाबों में वर्ष भर एक से दो मीटर पानी सुनिश्चित किया जा सके।
- मत्स्य पालक अपने जनपद में स्थापित मत्स्य पालक विकास अभिकरण के सम्पर्क में रहें।

वानिकी

- खैर, आंवला, अर्जुन के बीजों की बुआई यदि अभी तक पूरी न की गई हो तो अंकुरण कक्ष में तुरन्त पूर्ण कर लें। आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करें।
- यदि आपकी भूमि ऊसरीली हो तो जिप्सम प्राप्त करने हेतु स्थानीय कृषि अधिकारी से सम्पर्क करें।

- अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर में प्रिक् कर छाया घर (शेड हाउस) में रख दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 22 अप्रैल, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।